www.vimalvimarsh.com

ISSN : 2348 - 5884

विमल-विमर्श

वार्षिक शोध–पत्रिका

A Multi-disciplinary Refereed Research Journal

Vol. 1 (Special Edition)

Year : 6, 2018

INTERNATIONAL CONFERENCE

Executive Editor

Dr. P.K. Jayalakshmi

Editor

Vinay Kumar Shukla *'Vidrohi'*

St. Joseph's College for Women (A)

Reaccredited by NAAC with A Grade

Visakhapatnam - 530 004 (A.P.), Ph. : 0891-2558346

e-mail : sjcwvizag@gmail.com, web : www.stjosephsvizag.com

www.vimalvimarsh.com ISSN :2348-5884

Vimal Vimarsh

International

Peer Reviewed Research Journal

Vol. 1 (Special Edition) **Year : 6, 2018**

A Multi-disciplinary Refereed Research Journal

Chief Editor

Dr. Vibha Shukla

Executive Editor

Dr. P.K. Jayalakshmi

Associate Professor, HOD-Hindi,

St. Joseph's College for Women (A), Visakhapatnam

Editor

Dr. Vinay Kumar Shukla 'Vidrohi'

Asst. Professor, Dept. of Hindi & Other Indian Languages

Jammu Central University, Samba, J & K

St. Joseph's College for Women (A)

(Reaccredited by NAAC with A Grade)

Visakhapatnam - 530 004

स्त्री–विमर्श की अवधारणा:सैद्धांतिक पक्ष

मद्दाला जयलक्ष्मी
प्राध्यापिका हिंदी विभाग
के.बि.एन. कालेज
विजयवाड़ा।
मो. न. 9398124204
9347337074

स्त्री विमर्श ने स्त्री पाठ और स्त्रीवादी आलोचना के ज्वलंत प्रश्नों को उठाया है। स्त्री विमर्श ने ही स्त्री की स्थिति का स्पष्ट विवेचन किया है, कि किस प्रकार पितृसत्तात्मक समाज औरत को अन्य की स्थिति में बनाकर रखता है। स्त्री विमर्श ने पितृक मूल्यों, मानदंडों और वर्जनाओं के बारे में अनेक सवाल उठाए हैं जो स्त्री की वाणीहीन, आत्महीन, स्वत्वहीन अस्तित्व को रेखांकित करता है। स्त्री को हाशिए पर रखने और उसका एक परजीवी की भाँति गुलामी भरा जीवन जीने को स्त्री विमर्श में ही रेखांकित किया जाता है। स्त्री विमर्श ने वास्तव में पितृसत्तात्मक राभ्यताओं व संस्कृतियों के वास्तविक चेहरे को दर्शाया है, जिसमें स्त्री को अनुकूलित करके शोषण के ढ़ाँचे में ढ़ालकर शोषित होने के लिए तैयार किया जाता है। सिमोन बउवा बड़े ही स्पष्ट तरीके से कहती हैं, "औरत को औरत होना सिखाया जाता है और बनी रहने के लिए उसे अनुकूल किया जाता है। तथ्यों के विश्लेषण से समझ में आएगा कि प्रत्येक मादा मानव जीव अनिवार्यतः एक औरत नहीं है, यदि वह औरत होना चाहती है, तो उसे और तपने की रहस्यमय वास्तविकता से परिचित होना पड़ेगा।" स्त्री की दोयम दर्जे की अवस्था का जिम्मेदार पितृसत्तात्मक ढ़ाचे के नियम, कानून, कायदे और सोच है।

स्त्री विमर्श की अवधारणा आधुनिक युग की देन है, स्त्री की स्व की पहचान लिंग, जाति, रिश्ते–नाते, समाज, धर्म, देश, राष्ट्र, बोली तथा व्यवसाय के आधार पर करती है। स्त्री के स्वयं क पहचान करना ही स्त्री विमर्श है। यह स्त्री विमर्श का विचार मूलतः पश्चिम की देन है। अस्तित्ववादी युग में स्त्री की स्थिति पर विचार करना प्रारंभ किया गया और स्त्री के मानवीय रूप को मानने के बावजूद भी स्त्री के लिए बल बुद्धि चेतनाहीन एक

ऐसे जीव के रूप में कल्पना की गयी, जिसका प्रयोग पुरूष–समाज ने अपने स्वार्थों के अनुरूप किया। इंग्लैण्ड के जान स्टुअर्ट मिल ने सन् 1806–1873 में सर्वप्रथम स्त्री अस्मिता को नए संदर्भों में समाहित करने का प्रयास किया। समानाधिकार की बात करते हुए स्त्री के लिए मताधिकार की मांग की। इसी मांग के परिणामस्वरूप स्त्री की स्वतंत्रता के नए आयामों का उदय हुआ। सिमोन द बोउवार नाम स्त्री विमर्श की मुख्य लेखिका ने Second Sex नामक पुस्तक लिखकर नारीवादी आलोचना की शुरूवात की। वे फांस की ही नहीं, दुनियां की महान स्त्रीवादी लेखिका हैं। इनके अतिरिक्त और भी न जाने कितनी महान लेखिकाओं ने अपने उत्तेजक प्रश्नों के द्वारा स्त्री की वास्तिविक अवस्था को सामने लाकर सारे समाज को आश्चर्यचकित कर दिया। ये ही लेखिकाएँ पश्चिमी नारीवाद को जो नारीवादी का मूल था, प्रेरित किया है। पुरूष सत्ता की लिंग भेद की राजनीति का शिक्षा, साहित्य और कला पर प्रभाव Katharene M. Rogers की पुस्तक 'Thinking About Woman' और कैटी मिलट की किताब 'Sexual Politics' में दृष्टिगोचर होता है। इस प्रकार पश्चिम में ही नारीवाद की मूल शुरूवात हुई। इन समस्त विचारों का समष्टि रूप ही पश्चिम में नारीवाद के विचार को प्रस्थापित कर पाया है।

पश्चिम से आयी यह नारीवादी विचारधारा भारतीय परिवेश में भिन्न होने पर भी मूल सिद्धांत एक ही है। भारत में स्त्रियों को पश्चिम की स्त्रियों की भांति संविधान में समान अधिकार की लड़ाई नहीं नहीं लड़नी पड़ी कानूनी धरातल पर समान अधिकार प्राप्त होने पर भी आम स्त्री इन अधिकारों से परिचित न हो पायी। भारतीय समाज में स्त्री विमर्श के विचार की शुरूआज का श्रेय पुरूष वर्ग को ही जाता है, समाजिक रूढ़ियों, कुरीतियों के तरह स्त्रियों के साथ होने वाले अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने वाले ईश्वरचन्द विद्यासागर, राजराम मोहन राय जैसे पुरूष ही थे। इन पुरूषों ने सती प्रथा, बाल विवाह जैसी कुरीतियों से स्त्री को बचाने के लिए कदम उठाए। साहित्य के क्षेत्र रवीन्द्रनाथ टैगोर और जयशंकर प्रसाद एवं प्रेमचंद आदि ने स्त्री गाथा को लिखा इन सभी प्रयासों के मूल में स्त्री अधिकारों की चर्चा न होकर स्त्री के प्रति दया, सहानुभूति व संवेदना का भाव था क्योंकि एक पुरूष के लिए अपनी स्व की सत्ता के विरूद्ध स्त्री को समकक्ष स्थान देना बहुत कठिन कार्य था।

महादेवी वर्मा ने चौथे दशक में स्त्रीवादी विमर्श के अनेक उत्तेजिक प्रश्नों को समाज के सामने रखा। उनका मानना है कि, "पुरूष के द्वारा स्त्री का चरित्र अधिक आदर्शवादी बन सकता है, परंतु अधिक सत्य नहीं, विकृति के अधिक निकट पहुंच सकता है, परंतु यथार्थ के अधिक समीप नहीं।" महादेवी वर्मा का कहना यहीं स्पष्ट करता है कि, पुरूषों के प्रयास स्त्रियों को रूढ़ियों और पंरपराओं के चक्रव्यूह से निकलने नहीं देंगे। सीमोन बउवा भी पुरूषों के प्रयासों को न्यायसंगत नहीं मानती है। वे लिखती हैं कि "अब तक औरत के बारे में पुरूष ने जो कुछ भी लिखा तथा कहा है उस पर तिनक संदेह किया जाना चाहिए, क्योंकि लिखने वाला न्यायधीश और अपराधी दोनों है।" इसी कारण महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी विमर्श या नारी अस्मिता के प्रश्नों की सार्थकता मानी जा सकती है।

वास्तव में स्त्री विमर्श स्त्री के अस्तित्व की जांच–पड़ताल करके यह स्पष्ट करता है कि नारी को समाज में न किसी पर प्रभुता चाहिए, न किसी का प्रभुत्व केवल अपना वह स्थान, वह स्वत्व चाहिए जिनका पुरूषों के निकट कोई उपयोग नहीं चाहिए वह तो केवल अपने अस्तित्व की पहचान चाहती है। एक स्वतंत्र व्यक्ति की तरह जीना चाहती है। महादेवी वर्मा का कहना पूर्णतया सही है कि "हमें न किसी पर जय चाहिए, न किसी से पराजय।" महादेवी ने स्त्र के स्वत्व की मांग को उठाया, इन्हीं के समान अनेक महिला लेखिकाओं ने भी पुरूष वर्चस्ववाद के प्रतिमानों को तोड़ने का प्रयास किया। वास्तव में स्त्री का बौद्धिक धरातल पर स्वयं को रखकर स्त्रियों की स्थिति के बारे में चिंतन मनन अपने आप में बहुत बड़ा नारीवाद है। स्त्री विमर्श पुरूष लेखन के अंतर्विरोधों को खुलकर सामने लाया है। नारी लेखन के प्रयास के परिणामस्वरूप स्त्री के भीतर सदियों से पैदा हुई मानसिकता परिवर्तित हुई है।